- षष्ठ अध्याय -

"निमिषा" उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन

जहाँ तक शिल्पगत अध्ययन का सवाल है, उपन्यास के शिल्प के अंतर्गत आनेवाली बातें हैं - वस्तु शिल्प, चरित्र शिल्प, संवाद शिल्प, वातावरण शिल्प, भाषा शिल्प और उद्देश्य शिल्प । इनमें से संवाद शिल्प, भाषा शैली शिल्प ये तीनों बातें अधिक महत्त्वपूर्ण हैं । इन तीनों के अध्ययन को ही शिल्पगत अध्ययन कहा जाता है । सबसे पहले इन तीनों की सैद्धांतिक जानकारी हासिल करते हुंए उनकी दृष्टि से उपन्यास का अध्ययन किया जाना जरूरी है ।

संवाद अथवा कथोपकथन शिल्प :-

उपन्यास के तत्त्वोंमें तृतीय स्थान के अधिकारी होनेवाले इन संवादों का स्वरूप इतना विविधतापूर्ण है कि उसकी सही ढंग से परिभाषा आजतक किसी ने भी नहीं की है । फिर भी ऐसा कहा जा सकता है कि किसी भी वर्णन से युक्त कृतिमें पात्रों की बातचीत कथोपकथन है । आज के उपन्यासों में नाटकीयता अधिक दिखाई देती है । डा. प्रतापनारायण टंडन के अनुसार - "कथोपकथनों के द्वारा कुछ विचारों को सजीवता देने में सरलता पड़ती है । नाटकों में जो वस्तु अभिनय द्वारा व्यक्त होती है, उपन्यास में वह बहुत-कुछ कथोपकथनों के द्वारा लायी जाती है ।" [१] अर्थात टंडनजी नाटकीयता के लिए कथोपकथन का होना आवश्यक मानते है ।

---

१. डा. प्रतापनारायण टंडन - हिन्दी उपन्यास कला, पृष्ठ - २१९ ।

प्रत्येक उपन्यास का एक निश्चित उद्देश्य से कथोपकथनों का निर्माण करते हैं । इसी वजह से इसके कई उद्देश्य माने जाते हैं -

१] कथानक का विकास करना ।
२] पात्रों की व्याख्या करना ।
३] लेखक के उद्देश्य को स्पष्ट करना ।

इनके द्वारा ही उपन्यास में सजीवता, कथानक में विस्तार लाया जाता है । इसी वजह सेसिर्फ बातचीत प्रस्तुत करना यह उपन्यासकार का उद्देश्य न होकर पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को प्रस्तुत करना यह भी उद्देश्य रहते हैं ।

आलोच्य उपन्यास "निमिषा" में भी उपेंद्रनाथ अश्क जी ने जिन संवादों का चयन किया है, उनके पीछे उनके कई उद्देश्य रहे हैं। उन्होंने कई संवादों के जरिए दृश्यों में सजीवता भर दी है । कई घटनाओं का संकेत उन्होंने पात्रों के संवादों के द्वारा प्रस्तुत किया है। जैसे गोविन्द अपने कौन-से चित्र प्रदर्शनी में भेज रहा है यह बात कनक और निमिषा के संवादों से हमें पता चलती है -

"गोविन्द को क्या सलाह दे आयी हो। "

"उसने अपनी पत्नी के जो चित्र बनाये है, मैंने तो उन्हीं को भेजने की राय दी है । तीन-तीन चित्र सबको भेजने हैं । वह गंधेवाला चित्र भेजना चाहता था, पर मैंने राय नहीं दी । " [१]

इन कथोपकथनों के सहारे लेखक ने उपन्यास में स्वाभाविकता, रोचकता, उत्पन्न की है । इन कथोपकथनों से कथानक गतिशील बन जाता है । उपन्यास में कई जगहों पर पात्रों की मानसिक, आन्तरिक विशेषताओं का विश्लेषण करने के लिए भी कथोपकथनों का प्रयोग किया गया है । निमिषा का चाचा से अपने बर्ताव के लिए क्षमा माँग लेना, इस घटना से उसका भावुक-हृदय दिखाई देता है, वही दूसरी ओर गोविन्द के साथ उसकी शादी न होने के बावजूद भी उसका

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ५८ ।

गोविन्द के साथ सौम्य व्यवहार उसकी दृढता को दिखा देता है । गोविन्द का शादी करने का निर्णय, सुहागरात मनाने का निर्णय, निमिषा के साथ दूसरे दिन शादी के लिए तैयार न होना आदि बातों में उसकी अनिर्णय क्षमता दिखाई देती है । इस प्रकार पात्रों का अंतर्गत खोलकर रख दिया गया है ।

इन कथोपकथनों में कई गुण होना आवश्यक होता है -

१] उपयुक्तता : कथोपकथन घटनाओं, अवसर तथा वातावरण के लिए अत्यंत उपयुक्त होने चाहिए ।

२] स्वाभाविकता : कथोपकथन स्वाभाविक होने चाहिए जिससे उपन्यास में सहजगता आ जाती है ।

३] संक्षिप्तता : उपन्यास के कथोपकथन अत्यंत संक्षिप्त, एवं चुटीले होने चाहिए क्योंकि लम्बे-चौड़े कथोपकथन पाठकों को नीरस बना देते हैं ।

४] उद्देश्यपूर्णता : अनावश्यक या उद्देश्य रहित कथोपकथन फोके और नीरस लगते हैं ।

५] सम्बद्धता : कथोपकथनों का कथानक के साथ सम्बन्ध होना चाहिए। इस संदर्भ में डा. प्रतापनारायण टंडन कहते हैं - "कथोपकथन के माध्यम से उपन्यासकार जिस बात को कह रहा हो या कहना चाहता हो उसमें कथानक तथा पात्रों से किसी-न-किसी प्रकार का प्रत्यक्ष पारस्परिक सम्बन्ध आवश्य होना चाहिए। " [१]

१. डा. प्रतापनारायण टंडन - हिन्दी उपन्यास कला, पृष्ठ २२३ ।

६] अनुकूलता : कथोपकथन पात्रों के स्वभाव के अनुकूल होने चाहिए। डा. प्रतापनारायण टंडन जी मानते हैं - "यदि एक ओर कथोपकथन का पात्रों के स्वभाव से वैषम्य नहीं होना चाहिए तो दूसरी ओर उसे पात्रों के सामाजिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक स्वरूप के अनुकूल भी होना चाहिए।" [१] इसी से पात्रों के चरित्र-चित्रण में उपन्यासकार को सहायता मिल सकती है।

७] मनोवैज्ञानिकता : आधुनिक उपन्यासों में पात्रों का मनोविश्लेषण करने के लिए मनोवैज्ञानिक कथोपकथनों का सहारा लिया जाता है। इससे उपन्यास की कला में वृद्धि हो जाती है।

८] भावात्मकता : भावात्मक कथानक कथावस्तु को प्रभावशाली, सरस, काव्यात्मक बनाने में सहायता करते हैं।

उपर्युक्त गुणों के आधारपर उपेंद्रनाथ अश्क जी के उपन्यास "निमिषा" के कथोपकथनों को हम इस प्रकार परख सकते हैं: :-

१] <u>उपयुक्तता</u> -

इस उपन्यास में प्रयुक्त लगभग सभी कथोपकथन स्थान, समय और परिवेश क्या पात्रों की स्वाभाविकता की दृष्टि से उपयुक्त ही दिखाई देते हैं। सगाई के बाद गोविन्द क्या अनुभव करता है, इसके बारे में जब वह निमिषा को एक गर्त के उदाहरण के जरिए समझाता है तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वह कहती है -

-

१. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिन्दी उपन्यास कला, पृष्ठ, २२३।

"अगर आप ऐसा फोन करते हैं, तो सगाई तोड़ दीजिए, मुक्त हो जाइए।"

"मैं चाहता तो हूँ, पर मैं कुछ कर नहीं पा रहा।" गोविन्द के चेहरेपर कुछ अजीबसी विवशता छा गयी।" [१]

इसी प्रकार गोविन्द और निमिषा, गोविन्द और माला, भाईसाहब और गोविन्द आदि सभी के संवाद अत्यंत ही उपयुक्त बन गए हैं।

२] स्वाभाविकता -

सहज, स्वाभाविक कथोपकथन अश्क जी की विशेषता रही है। इसी के सहारे उन्होंने आरंभ से अंत तक वे हमें मजबूर कर देते हैं कि हम उपन्यास पढ़े। सभी कथोपकथन पात्रों के स्वभाव के अनुकूल हैं। कनक की बातों से हम उसके स्वभाव का गर्व, घमंड देख सकते हैं। निमिषा उससे पूछती है -

"तुमने अपनी माँ का चित्र बेच दिया?"

"क्यों" कनक ने हैरत से पूछा।

"गोविन्द ने अपने चित्रों को बेचने से मना कर रखा है।"

कनक व्यंग्य से हँसी, "गोविन्द कहाँ का चित्रकार है," उसने अपने गिर्द खड़े प्रशंसकों को सुनाकर कहा, और फिर अंग्रेजी में बोली, "वह शौकिया चित्रकार है, पेशेवर चित्रकार बनना उसके भाग्य में नहीं, लेकिन मैं तो पेशेवर चित्रकार बनना चाहती हूँ और वक्त आयेगा कि मेरे चित्र सारी दुनिया में बिकेंगे।" [२]

गोविन्द की पत्नी माला अनपढ़ है और इसी वजह से उसमें अंधश्रध्दा किस प्रकार दिखाई देती है, उसे प्रस्तुत करनेवाला यह उदाहरण है -

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - १२२।
२. - वही - , पृष्ठ - ६९।

"क्यों उन बेचारों को गालियाँ दे रही हो, उनका क्या कसूर है ?"

"क्यों, वे इस ब्याह के साक्षी नहीं है ? कहीं से भगाकर लाये हो मुझे ? कई दिनों से देख रही हूँ, आप सीधे मुँह बात नहीं करते । आप पर उस खड़ी ने जादू कर रखा है । इस बार मैं राही जाऊँगी तो टोना कराके लाऊँगी । "[1]

इसी प्रकार अन्य कई कथोपकथन अत्यंत स्वाभाविक बन गये है ।

3] संक्षिप्तता -

पाठकों की रोचकता बनाए रखने में संक्षिप्त कथोपकथन भी सहाय्यता करते हैं । उपेंद्रनाथ अश्क जी ने भी इन्हीं के माध्यम से कौतुहल बनाए रखा है -

"मै कनक लाल का गेन्दे के फूलोंवाला स्टिल खरीदना चाहती हूँ।"

"दैटस् गोल्ड" । पाराशर साहब ने कहा ।

"कब" ? लड़की ने कहा ।

"कल ही बिक गया "

"कनक जी के सब चित्र बिक गए।"

"नहीं "मदर" नहीं बिका ।"

"वह मुझे दे दीजिए । "

"उसकी कीमत १०० है। "

यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि उसे कला में रुचि नहीं परंतु किसी वजह से कनक का चित्र उसे खरीदना ही है ।

गोविन्द चित्रकार और कवि होने के साथ-साथ हॉकी भी देखता है, इस बात का पता हमें इस संवाद से चल पाता है -

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ३०२ ।

"जी गोविन्द भाई साहब आ गये हैं।" युवक ने वहीं खड़े-खड़े ही कहा, "वे स्वयं यहाँ आने, लेकिन उनके घुटने में सख्त में चोट आ गयी है। वे भाईसाहेब की दुकानपर आप की प्रतिक्षा कर रहे हैं।" [1] जब निमिषा को गोविन्द का भाई यह बात बताता है तो वह चिंतित होकर पूछती है -

"क्या बहुत चोट आ गयी ?"
"कुछ ज्यादा ही आ गयी है, चलने में दिक्कत होती है।"
"कैसे आ गयी ?"
"शायद हॉकी खेलते-खेलते।" [2]

इस प्रकार संक्षिप्त कथोपकथनों के जरिए उपन्यासकार ने प्रभाव जमाने की कोशिश की है।

४] उद्देश्यपूर्णता -

उपेंद्रनाथ अश्क जी ने कई उद्देश्यों को सामने रखकर संवादों का चयन किया है। गोविन्द तय कर देता है कि माला अगर सुंदर नहीं है तो वह उसके साथ नहीं रहेंगा लेकिन जब भाईसाहब उसे यही सलाह देते हैं तो वह उल्टी उन्हींपर उखड़ जाता है -

"आप भाभी की सुंदर चचेरी बहन तो ला देंगे", उसने तीखे व्यंग्य से कहा, "लेकिन जिस लडकी को मै ब्याह लाया हूँ, उसका क्या होगा ? यह भी आपने सोचा है।" [3] वह उन्हीं की गलतियाँ बताते बताते वह उसमें इतना खो जाता है कि वह माला की वकालत करने लगता है और इस निर्णय के बारेमें उसे आजीवन पछताना पडता है।

-

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - १०४।
२. - वही - , पृष्ठ - १०४।
३. - वही - पृष्ठ - १९९।

५] सम्बद्धता -

कई बार सिर्फ कुछ घटनाओं के संकेतमाग के लिए कुछ कथोपकथनो का निर्माण किया जाता है । कभी-कभी ये संवाद पात्रों का चरित्र-चित्रण भी प्रस्तुत करते है, सिर्फ उद्देश्य से ही उनका सम्बन्ध नहीं होता । गोविन्द और निमिषा के निम्नलिखित संवाद से हम गोविन्द की दिया मनस्थिति को देख सकते हैं -

"आप कुछ बाते करनेवाले थे" आखिर निमिषा ने ही खोमोशी तोडी । सर्दियों की धूप-सी एक बहुत पीली मुसकान गोविन्द के होठोपर फैल गयी । हाँ बाते तो करना चाहता था, लेकिन कहाँ से शुरु करूँ, कुछ समझ में नहीं आता । क्या बाते करूँ ? और अब बाते करने से लाभ ही क्या है ? "

"हानि-लाभ की बात तो मैं नहीं जानती", निमिषा ने कहा, "पर किसी आत्मीय को सुना देने से मन हलका हो जाता है। " [१]

गोविन्द अंततक अपनी वास्तविक स्थिति निमिषा के सामने नहीं रख पाता ।

६] पात्रानुकूलता -

पात्रों के स्वभाव, परिस्थिति के अनुकूल लिखे गए संवादों से ही उपन्यास सफल बनता है । इस उपन्यास में गोविन्द के कलाकार व्यक्तित्व को दर्शानेवाले संवाद, कनक का गर्व दिखानेवाले, माला के स्वाभाविक ईर्ष्या से युक्त निमिषा की दृढता दिखानेवाले संवादो का निर्माण किया गया है ।

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - २३७ ।

जैसे - कनक और निमिषा -

"तुम पीड़ा और प्रेम चाहती हो, क्यों नहीं इसी कलाकार से प्रेम करती। " हालाकि उसने मजाक किया था, लेकिन कनक बिफर गयी । "प्रेम करने के लिए क्या वह सड़ा टीचर ही रह गया मेरे लिए, जिसे रहने को धोबियोंकी गली के सिवा कोई जगह नहीं मिली । मुझे उससे प्रेम नहीं । उसके चित्रों को देखकर जरूर मुझे ईर्ष्या हुई । प्रेम तो मै सात जन्म उससे नहीं कर सकती । जिस कमरे में वह रहता है, वहाँ दस मिनट बैठना मेरे लिए दूभर हो गया। " [1] यहाँ कनक का घमंड दिखाई देता है। "

गोविन्द और निमिषा -

जब गोविन्द अचानक ही निमिषा के सामने शादी का प्रस्ताव रख देता है तो वह तैयार नहीं होती । वह दूसरे दिन आने की बात करती है।

"आज ही हो सकता है। "
"मै कल सुबह आऊँगी" और निमिषा ने नमस्कार के लिए हाथ उठाया।
"कल कुछ न हो सकेगा। "
"मै कल सुबह आऊँगी। " निमिषा ने एक बार फिर कहा ।" [2]

यहाँ निमिषा की दृढता दिखाई देती है।

७] <u>मनोवैज्ञानिकता</u> -

मनुष्य के मनका विश्लेषण करना वैसे तो एक अत्यंत कठिन बात है । पात्रों के बातचीत के माध्यम से हम यह प्रयास कर सकते हैं । इनके माध्यमसे पात्रों के अंतर्मन मे झाँका जा सकता है। उपेंद्रनाथ अश्क जी ने पात्रों की मानसिकता का चित्रण यथार्थ ढंग से किया है ।

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ५६ ।
२. - वही - , पृष्ठ - १५८ ।

निमिषा को इस बात का पता चलता है कि किनक गोविन्द से प्रभावित है तो वह उसपर आरोप लगाती है - "तुम पीड़ा और प्रेम चाहती हो, क्यो नहीं इसी कलाकार से प्रेम करती ? " [१] यहाँ निमिषा के मन मे आये विचार प्रकट हो जाते हैं। जब निमिषा को इस बात का पता चल जाता है कि गोविन्द एक टीचर है तो उसे संतोष मिलता है ।

गोविन्द जब निमिषा को अपनी सगाई की बात कहता है तो उसके मन में चल रहे द्वंद्व का पता हमें चलता है -

"मैंने एक मित्र द्वारा अपनी ससुराल में भी कहलवाया है कि लड़के का मन कही दूसरी जगह है, वे सगाई तोड़ दे, लेकिन उन्होंने कोई पूछ-पड़ताल नहीं की । मुझे लगता है कि मेरे भाग्य मे एक दूसरी ट्रेजिडी लिखी है । आर्टिस्ट हूँ। अभिशप्त जिंदगी जीना ही मेरी नियति है । " [२]

८] भावात्मकता -

अश्क जी ने उपन्यास मे कई जगहों पर संवादोने भावात्मकता को भर दिया है। इनसे उपन्यासो में सरसता आ गयी है । निमिषा और गोविन्द कनक और निमिषा, निमिषा और चाचाजी आदि के संवाद उनकी भावुकता के द्योतक हैं ।

जैसे - निमिषा और चाचाजी ।

"चाचाजी, आपने कहा था आप मेरे गार्डियन नहीं रहना चाहते", निमिषा ने घुटे-घुटे स्वर में किसी तरह आँसुओ को बरबस रोक कर कहा था, "मैं अपनी प्रिंसीपल के यहाँ गयी थी कि वे मेरी गार्डियन बन जायें अगर आप बिलकूलही न चाहेंगे, तो वे बन जायेगी, लेकिन आपने मुझे इतना प्यार दिया

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ५५ ।
२. - वही -, पृष्ठ - १९ ।

है कि मैं सोचती हूँ, मुझसे कुछ ऐसीही भूल बन पड़ी होगी जो आप अपनी छत्र-छाया हटाने को तैयार हो गए हो। मुझे ठीक-ठीक अपनी गलती तो मालूम नहीं, लेकिन मै आपसे सिर्फ यही कहती हूँ कि आप के लाड़ के कारण मुझसे जो भी गलती बन पड़ी हो, उसे आप क्षमा कर दें, और मुझे एक अवसर और दें। मैं कोशिश करूँगी कि आपको या चाची को मुझसे फिर कोई शिकायत न हो। "

इतना कहते-कहते अपने ऊपर से उसका संयम टूट गया था और वह होने लगी थी।

कुछ अजीब से भावावेग से चाचा ने उसे बाँह मे भर कर बगल से चिपटा लिया था। "तुम्हारा खयाल है, मैंने वहबात बिना किसी तकलीफ के कह दी थी," उन्होंने कहा, "मै ही जानता हूँ, मुँह से वह बात निकालकर मुझे खुद कितनी तकलीफ हुई है। " [1] भावुकता का यह एक ही उदाहरण अश्क जी के संवादो का परिचय कराने के लिए काफी है।

इन गुणो के साथ-साथ उनकी भाषा मे काव्यात्मकता भी देखने को मिलती है। जगह-जगह उन्होने उर्दू के गजलों और शेरोको उतारा है। जैसे गोविन्द के हारा मुशायरे में पढ गए शेर -

"गैर हालत है तेरे बीमार की
आज तो रहने दो हीलाबाजियाँ।
वक्त-ए-आखिर है, तसल्ली हो चुकी
अब करेगी मौत चारासाजियाँ। " [2]

इस प्रकार इन कथोपकथनो मे अन्य गुणो के साथ काव्यात्मकता भी देखने को मिलती हैं।

-

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ४०।
२. - वही -, पृष्ठ - १९।

भाषा शिल्प :-

भाषा शैली ये उपन्यास के पाँचवें तत्व के अंतर्गत आ जाते हैं । आरंभिक उपन्यासों मे कथानक को महत्त्व दिया जाता था, आज भाषा अपना एक अलग महत्त्व रखती है । इसके जरिए पाठकोंपर विशेष प्रभाव डाला जा सकता है । चरित्र की विशेषताओं को भाषा के जरिए ही बताया जा सकता है । कभी-कभी उपन्यासकार भाषा के अलग-अलग स्थों का चित्रण भी करता है जैसे - बोलचाल की भाषा, प्रदेश विशेष की भाषा आदि ।

उपेंद्रनाथ अश्क जी के उपन्यास मे भाषा के कौन-कौन से स्थों का चित्रण किया है, उन्हें हम निम्नलिखित रूप मे देख सकते हैं ।

१] शब्दप्रयोग के विभिन्न रूप :-

भाषा की मुलभूत इकाई शब्द है इसलिए किसी भी उपन्यासकार के लिए यह आवश्यक बन जाता है कि अपनी भाषा को सहज सुंदर बनाने के लिए वह शब्दों के कई स्थों का प्रयोग करे । जैसे -

अ] तत्सम शब्द -

संस्कृत शब्द जहाँ ज्यों-के-त्यों लिए जाते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं । "निमिषा" में निम्नलिखित तत्सम शब्द आए हैं - मन, आत्मकेंद्रित, आलोचना, अहं, वर्ग, उद्वेलित, शून्य, स्वान्तासुखाय, धृष्टता, प्रतिभा, क्रोध, आदि ।

आ] तद्भव शब्द -

भाषा मे प्रयुक्तहोनेवाला वह संस्कृत शब्द जो थोड़ा सा विकृत बनकर आया है । जैसे-चून्नो, परनिता, आदि ।

इ] देशज शब्द -

उस प्रदेश विशेष से संबंधित शब्द देशज शब्द कहे जाते हैं। जैसे- सियापा, ननतरानियाँ, कंजका आदि।

ई] अंग्रेजी शब्द -

बी.टी., ड्रॉप, बी.ए., एम.ए., प्रिंसीपल, सर्टीफिकेट, मेकलेगन, सोशल वर्कर, फर्स्ट डिवीजन, ट्रिब्यून, सिविल मिलीट्री गजट, फ्लैट, एडवोकेट, रिजल्ट, फ्लोअर, कैण्टोनमेण्ट, शटलकॉक, सोफिस्टीकेटिड, एसोसिएशन, डाईनेमिक, प्लंज आदि कई अंग्रेजी शब्दो का प्रयोग इस उपन्यास में हुआ है।

उ] अंग्रेजी वाक्य -

"ही ऑफ्ई मी मनी, एज इफ ही वाज नाट बाईंग माई पेण्टिंग, बट मी। " [1]

"यू बेटर इन योर ओन प्यूस नाऊ" [2]

ऊ] अरबी, फारसी, उर्दू शब्द -

दफ्तर, जिक्र, मुशायरा नुमा, बेतरह, तहमद, दर्द सोज, गजल, रदीफ, का फिया, इन्कलाब, बर्पाना, मुकर्रर, इरशाद, तरन्नुम, इन्कार, ताब्दीली, इम्तिहान अव्वल, सलीका, नफासत, दुश्मन, तबीयत, दफा, इरादा, परस्तिश, नजाकत, जेहन, दशा, दीवाना, इमकान, नफरत, इन्तजार, तकलीफ, निगाह, आदि।

-

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ६५।
२. - वही -, पृष्ठ - २५३।

ए] <u>द्विरुक्त शब्द</u> -

गिरते-गिरते, लेटे-लेटे, नयी-नयी, तेज-तेज, आते-आते, रोज-रोज, साथ-साथ, हरगिज-हरगिज, जोर-जोर, बैठे-बैठे आदि ।

ऐ] <u>निरर्थक शब्द</u> -

गुच्छा-मुच्छा, फुसूर-फुसूर, बुर्द-बुर्द, धोती-ओती आदि ।

ओ] <u>अपशब्द</u> -

अद्दा, छिछोरापन, रण्डी, साली, वेश्या, लुतरी, चामचड़िक आदि ।

शब्दप्रयोग के इन विभिन्न रूपों के कारण ही भाषा अत्यंत सुंदर बनी हुई दिखाई देती है ।

२] <u>भाषा के विभिन्न रूप</u> :-

उपेंद्रनाथ अश्क जी उपन्यास "निमिषा" में भाषा के विभिन्न रूप भी देखने को मिलते है -

१. <u>वर्णनात्मक भाषा</u> -

अ] "बस में बैठे-बैठे निमिषा को आँखों में रूप की वह भोली प्यारी मूरत घूम गयी । लम्बा कद, पतली, छरहरी किसी कमनीय बेलि-सी देह-यष्टि, भोला-सा चेहरा, बड़ी-बड़ी शर्मिली, आश्चर्य-भरी आँखे - कभी उसकी उपस्थिति में वे माँ-बेटी आती तो निमिषा अपलक रूप को देखती रहती । " [१]

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ३० ।

आ] "एक सौधी, सरल-हँसमुख युवती का बस्ट था, जिसने साड़ी और पुलोवर पहन रखा था। साड़ी का पल्लू पुलोवर की बायीं ओर से निकलकर सिर के अधे हिस्से को ढँकता हुआ पीछे गायब हो गया था। बाल बायीं ओर से कटे थे। वहीं क्लिप की मदद से लहरिया-सा बनाते हुए दायें कान को ढाँपे थे। वहीं कला की नौसिखे सुनहरी बुन्दा लटक रहा था! होंठ असमंजस-भरी मुस्कान में खुले थे, जिनमें से बत्तीसी झलक रही थी।" [1]

२] उपदेशात्मक भाषा -

अ] "यह भी हो सकता है कि वे तुम्हारे व्यवहार से दु:खी हों। तुम पढ़ीलिखी और समझदार लड़की हो, तुम्हारी चाची उतनी समझदार नहीं। जरूर ही वे तुमसे बेहतर समझदारी की आशा रखते होंगे। तुम उनकी गार्डियनशिप छोड़कर मेरे यहाँ आ जाओगी तो उन्हें बहुत दु:ख होगा। यह सोच लो। ऐसा कदम उठाने की राय मैं तुम्हें तभी दे सकती हूँ, जब पानी सिर से गुजर जाय और तुम सब प्रयत्न करके घर जाओ।" [2]

३] व्यंग्यात्मक भाषा -

अ] "ठीक है, मैं परसों सुबह आऊँगी और भाभी से अनुरोध करूँगी कि देवनगर जाने से पहले आपके साथ चन्द दिन को रेनाला आये।"
"पूछ देखना, यदि उस नारी-रत्न की समझ में तुम्हारी बात आ जाए।" गोविन्द व्यंग्य से हँसा था।" [3]

---

१. उपेन्द्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ६५।
२. - वही -, पृष्ठ - ३७।
३. - वही -, पृष्ठ - २१५।

४] पात्रानुकूल भाषा -

अ] "मैं नहीं जानता कि चित्रकला की जन्मजात प्रतिभा आप में है या नहीं ? जहाँ तक मैंने पाया है, जीनियसों के लिए तो कोईनियम नहीं होता, वे अपने नियम स्वयं बनाते है । चित्रकला के इतिहास में ऐसे भी कलाकार हुए हैं, जिन्होंने किसी उस्ताद से चित्रकला की ट्रेनिंग नहीं ली, सिर्फ अपनी ही प्रेरणा से कला को सिध्द किया और आर्ट के इतिहास में क्रांति कर गए। " [१]

५] आवेशात्मक भाषा -

अ] "उठो-उठो, बेकार ही मूड़ खराब न करो । न प्यार के लिए अभी समय बीता है, न पीड़ा के लिए । इतनी गर्मी है और तुम बरामदे में बैठी हो । चलो चरा लॉन में घूमें । " [२]

आ] "सो गलती मेरी हो, आप की हो, भाभी की हो या माला के रिश्तेदारों की, उस बेचारी की क्या गलती है ? आप उसके भाईयों की जान भले ही खा लेंगे, पर जान तो दरअसल उसी की जाएगी। " [३]

६] गंभीरता से युक्त भाषा -

अ] "जो कुछ मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ, वह सब सुनकर तुम्हें निराशा हो, दु:ख भी हो, लेकिन झूठ बोलने की मेरी आदत नहीं, न मैं आत्मियों को धोखा ही दे सकता हूँ, न दोहरा जीवनही जी सकता हूँ । इसलिए मैंने सोचा है कि तुम्हारे साथ जिन्दगी शुरु करने से पहले, मैं तुम्हें सारी स्थिति से आगाह कर दूँ । " [४]

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ८५ ।
२. - वही - , पृष्ठ - ५६ ।
३. - वही - , पृष्ठ = १९९।
४. - वही - , पृष्ठ - २२५।

७] ग्राम्य भाषा -

अ] "तुहाड़ा तां सक्खर दा डैम ही धरल-धरल टुट्ट पिया। " [१]

"मै फेर किध्दे नाल खेड्डा ? " [२]

इस प्रकार भाषा के कई रूपों का प्रयोग उपेंदनाथ अश्क जी ने इस उपन्यास में किया है। जिससे उपन्यास में स्वाभाविकता, सुंदरत, सहजगता आ गयी हैं।

२] भाषा सौंदर्य के साधन :-

भाषा को सुंदर बनाने के लिए और भी कई तरह के प्रयोग किए जाते है जैसे उसमें विशेषण, उपमाएँ, रूपक, शब्दशक्तियाँ, प्रतीक, बिम्ब, मुँहावरे और कहावतें, सुक्तियाँ आदि का प्रयोग किया जाता हैं।

उपेंद्रनाथ अश्क जी के उपन्यास में भाषा सौंदर्य के कई साधनों का उचित मात्रा में प्रयोग किया गया है। लेखक ने अपनी अभिव्यक्ति को सार्थक बनाने के लिए अलंकारिक भाषा का प्रयोग भी किया है।

१. विशेषण -

उदास, पुरनम आँखे, चिलचिलाती धूप, भोली-प्यारी सूरत, उबडबायी आँखे बेहिस, मोटी खाल, फूहड़ औरत आदि।

२. उपमाएँ -

पतली, छरहरी किसी कमनीय बेलि-सी देहयष्टि, पतली छरहरी गुटकनी लड़की, नारी की शबीह, आदि।

-

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ३०४।

२. - वही - , पृष्ठ - २९८।

३. कहावतें -

अ] "जाके पैर न फटे बिवाई सो क्य जाने पीर पराई " [१]

आ] "पल में तोला पल में माशा। " [२]

इ] "इक ने बहुरी सोहनी नाले सुत्ती उठ्ठी । " [३]

४. मुँहावरे -

हतोत्साह होकर बैठना, हौसला बढाना, तसल्ली देना, सफलता पाना, सिर झुकाना, आँखो से ओझल हो जाना, अचकचा जाना, कण्ठ आई हो जाना, दिल डोल जाना, खिल्ली उड़ाना, टूट जाना, हाथ पीले करना, दिल दहल जाना, मुँह के बल गिरना, खटक जाना, तशरीफ फ़रमाना आदि ।

५. सुक्तियाँ -

अ] "पीड़ा और प्यार के बिना कला का जन्म नहीं होता। " [४]

आ] "जी-ए-उस्ताद खाली अस्त। " [५]

संक्षेप में उपेंद्रनाथ अश्क जी के "निमिषा" उपन्यास की भाषा के रोचकता, पात्रानुकूलता, स्वाभाविकता जैसे गुणों के साथ-ही-साथ काव्यात्मकता भी हैं । देशकाल वातावरण के अनुसार ही उपन्यासकार ने भाषा का प्रयोग किया है । लेखक का उर्दू भाषा का ज्ञान अधिक है, इस बात का पता हमें इससे चलता है ।

-

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - २१ ।
२. - वही - , पृष्ठ - ४८ ।
३. - वही - , पृष्ठ - १९६ ।
४. - वही - , पृष्ठ - ५५ ।
५. - वही - , पृष्ठ - ८१ ।

शैली शिल्प :-

आरंभिक काल में रूढिगत शैली का प्रयोग उपन्यास लिखने के लिए किया जाता था । तृतीय पुरुष के रूप में वर्णनात्मक शैली ही अधिक प्रचलित थी । आधुनिक काल में अन्य भी कई तरह की शैलियों का निर्माण हो चुका है । आत्मकथात्मक शैली में प्रथम पुरुष में किसी बात का वर्णन किया जा सकता है । द्वितीय और तृतीय पुरुषोंमें किया जानेवाला चित्रण विवरणात्मक शैली के अंतर्गत आ जाता है । अर्थात वर्णन के जितने रूप हो उतने शैलियों के प्रकार बन जाते हैं ।

उपन्यास लिखने के लिए आधुनिक काल में जितनी शैलियाँ प्रचलित हैं, उनके आधारपर हम उपेंद्रनाथ अश्क जी के "निमिषा" उपन्यास का विश्लेषण निम्नलिखित रूप में कर सकते हैं ।

१] वर्णनात्मक शैली :-

इस शैली के माध्यम से उपन्यासकार एक तटस्थ भाव में रखकर वर्णन करता चला जाता है । इस शैली के माध्यम से सफल चरित्र-चित्रण भी किया जा सकता है । यहाँ उपन्यासकार सभी विषयों का ज्ञाता बनकर हमारे सामने आता है । उपेंद्रनाथ अश्क जी ने एक ओर शहर का वर्णन सफलता से किया है, "शहर को पक्की चौड़ी सडकों, बाग-बगीचों, मकानों-दुकानों और पक्के फुट-पाथों को बस कहीं पीछे छोड़ आयी थी । नहर तक तो कुछ बंगले साथ आये थे, नहर के इस पार भी कुछ नयी कोठियाँ बन रही थी, पर वह सब बहुत पीछे छूट गया था । अब अगस्त की उस धूप में, जो कहते है हिरनों की पीठें काली कर देती है, कोलतार की खाली सड़क बिछी थी, जिसके दोनों और कच्चे रस्ते थे और पेरे दोनों ओर कटे खेत थे । " [१]

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ३८ ।

इसी प्रकार अश्क जी ने गोविन्द के माध्यम से एक गर्त का भयानक चित्र खिंचा है - "मैंने एक बार सोनामर्ग [कश्मीर] के ग्लेशियर में बेहद गर्त देखा था। सदियों से जमी काली-काली बर्फ के सीने पर, पिघलती हुई बर्फ से पानी की लकीरों का जाल-सा बिछ जाता है और कहीं आगे जा कर ये नन्हीं-नन्हीं नदियाँ बर्फ का सीना चीर कर ग्लेशियर के नीचे बहते जल में जा मिलती है। धीरे-धीरे वहाँ बहुत गहरा, काला, भयावह गर्त बन जाता है - जो कुछ अजीब तरह अपनी ओर खींचता भी है और बेतरह डराता भी है। मुझे अपना होनेवाला विवाह उसी महागर्त-ऐसा भयावह लगता है और यह भी कि उसमें डूब कर खत्म होना मेरी नियति है।" [१] उसके अंतर्द्वंद्व का पता इससे चलता है।

२] विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक शैली :-

इस शैली के माध्यम से उपन्यासकार कुछ ब्यौरे दे देता है जिनकी पाठकों के लिए आवश्यकता होती है। यहाँ भी उपन्यासकार अत्यंत तटस्थ रहता है और विश्लेषण करता चला जाता है। इससे पाठकों को उन घटनाओं या पात्रों के चरित्र की जानकारी प्राप्त होती है।

गोविन्द या आया हुआ माला के सौंदर्य का वर्णन भी विश्लेषनात्मक शैली का ही एक नमूना है - "चौड़ा माथा, एकदम तिकोना चेहरा, बीचमें काफी लम्बी तीखी नाक, पिचके कल्ले, - चेहरेपर बेतहाशा पाउडर, होंठोंपर गहरी सुर्खी और दोनों गालों पर काफी बड़ी गोल झाईयाँ जो उस पाउडर में से उभरकर और भी नुमाईयाँ हो गयी थी और निहायत बदजेब लगती थी।" [२] यहाँ हम पाते है कि माला के सौंदर्य का वर्णन गोविन्द को याद आता है जब कि उपन्यासकार स्वयं ही कनक और निमिषा के स्वभावगत गुणों का वर्णन करता है। साथ-ही-साथ उनके सौंदर्य का चित्रण भी करता है। लेखक के द्वारा निमिषा के चाचो के व्यक्तित्व एवं गुणों का विश्लेषण इस प्रकार किया गया है

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - १२२।
२. - वही - , पृष्ठ - १८८।

"एक लम्बी-ऊँची, गदराये दोहरे बदनवाली, अनपढ़ और फूहड़ युवती उसकी चाची बनकर आ गयी तो उसके गोरे रंग और बड़ी-बड़ी आँखों के बावजूद भी निमिषा के मन ने उसे स्वीकार नहीं किया। उसे बहुत जल्द पता चल गया कि उसकी यह चाची छोटे दिल की, अपने ओछे स्वभाव और फूहड़ता को पैसे में छिपानेवाली, सलीके और नफासत से कोसों दूर, अमृतसर के गलियों के संकुल वातावरण में दबी-पली युवती है। उसे होटलों में खाना, हर तीसरे दिन सिनेमा देखना और देर तक सोना पसंद था।" [१]

इस प्रकार कभी पात्रों के व्यक्तित्व विश्लेषण के लिए तो कभी चित्रगत गुणों को बताने के लिए लेखक ने इस शैली का प्रयोग किया है।

३] पत्रात्मक शैली :-

आधुनिक काल में कुछ ऐसे भी साहित्यकार रहें है जो पूरे-के-पूरे उपन्यास में पत्र शैली का प्रयोग करते हैं। जब कि उपेंद्रनाथ अश्क जी ने इस उपन्यास में लगभग दो अध्यायों में पत्र शैली का प्रयोग किया हुआ हमें दिखाई देता है। उपन्यास की नायिका "निमिषा" का परिचय गोविन्द के साथ पहले पत्र के ही जरिए होता है। इसके पहले भी "निमिषा" गोविन्द को एक मुशायरा नुमा कविसम्मेलन में और चित्र प्रदर्शनी में देख चुकी है। उसके कलाकार व्यक्तित्व का प्रभाव निमिषापर पड़ता है परंतु वह नौकरी के लिए रेनाला चली जाने के कारण और गोविन्द भी देवनगर चला जाता है। इसी वजह से उन दोनों की मुलाकात नहीं हो पाती। लेकिन बादमें निमिषा, जो गोविन्द के प्रति आकृष्ट हो चुकी है, उसे पत्र लिखती है और चित्रकारी के लिए मार्गदर्शन पूछती है। इसके बाद पत्रों का सिलसिला तभी खत्म हो जाता है जब निमिषा के साथ शादी न कर मजबूरन गोविन्द को माला के साथ शादी करनी पड़ती है और उसके पश्चात भी हिदायत के बावजूद भी गोविन्द निमिषा को दो पत्र लिखता है जिसमें से अंतिम पत्र के साथ उपन्यास का भी

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ३०-३१।

अंत हो जाता है । पहला पत्र वह नहीं भेज पाता है । इसके साथ-ही-साथ गोविन्द अपनी पत्नी माला को विवाह विच्छेद की सलाह देता एक खत लिखता है और दूसरा खत अपने मित्र हरभजन को लिखता है जिसमें अपनी मानसिक स्थिति का विश्लेषण करता है ।

इस प्रकार हम यह पाते हैं कि उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अपने उपन्यासकी लगभग आधी घटनाएँ पत्र शैली में लिखी है जिसमें अधिकतर गोविन्द और निमिषा के ही अंतर्मन को खोलकर रख दिया गया है ।

४] नाटकीय शैली :-

उपन्यास के कथोपकथनों में नाटकीयता जब कोई उपन्यासकार भर देता है तो वह उपन्यास रोचक, सहज, स्वाभाविक, सरस बन जाता है । उपेंद्रनाथ अश्क जी के इस उपन्यास के सभी संवादो में नाटकीय शैली साफ झलकती है । जैसे कनक और निमिषा का यह फोनपर वार्तालाप -

"दूसरी ओर कनक थी । उसके स्वर में खीझ, चिड़चिड़ाहट, कड़े क्रोध और उलाहना था । "

"क्या वहीं मॉडल टाऊन में समाधि लेने का फैसला कर लिया है ? "
निमिषा चुप रही ।

"इतने दिन हो गए तेरी सुरत देखे" कनक ने कहा, "सोचा कहीं दुश्मनों की तबीयत खराब न हो गयी हो । दो-तीन दफा मिल्क बार में फोन किया कि ऊपर से तेरा पता ला दे । कुछ पता नहीं चला तो आज खुद निसबत रोड आयी । मालूम हुआ कि जनाब सात-आठ दिनों से मॉडल टाऊन में तशरीफ फरमा है । सोचा जरा फोन करूँ । क्या मुसीबत है जो मॉडल टाऊन में जा बैठी हो ? "

निमिषा फिर चुप रही । कनक कुछ चिढ कर बोली :

"जवाब क्यों नहीं देती, मुँह में क्या घुंघनियाँ डाल रखी है या मुझी से कोई कसूर बन आया है और नाराज हो गयी हो । "

"नहीं मैं नाराज नहीं हूँ । " निमिषा ने धीरे से कहा ।

"तो फिर । " कनक ने जैसे बन्दूक दागी ।

"फिर क्या ? " निमिषा ने सहज भाव से कहा ।

"फिर तेरा सिर । " [१]

कनक और निमिषा के उपर्युक्त संवाद से निमिषा किसी कारण से त्रस्त है, इस बात का पता भी चल जाता है ।

उसी प्रकार गोविन्द के भैया, भाभी और गोविन्द इन तीनों का संवाद तो पूरे उपन्यास में एक नाटकीय मोड़ ला देता है ।

"सहसा भाभी रोने लगी और उसने कहा, "यह वो लड़की नहीं, जिसे मैंने पसंद किया था । राहोंवालों ने हमारे साथ धोखा किया है । "

"क्या मतलब । " भाईसाहब बनके, "क्या उन्होंने दिखायी कोई और लडकी थी और ब्याही कोई दूसरी है ? "

"मैं क्या जानूँ" भाभी रोते हुए बोली, "लेकिन यह वो लड़की नहीं है । "

"हो सकता हूँ, बीमारी-उमारी के कारण कमजोर हो गयी हो " भाईसाहब ने का, "और गालोंपर काली झाँइयाँ पड़ गयी हो ।"

"लेकिन वो तो अठारह-बीस वर्ष की लड़की थी - पतली - छरहरी, और बहुत ही सुंदर और . . . . "

"क्या उसका चेहरा गोल और माथे पर किसी घाव का छोटा-सा निशान था ? " गोविन्द ने भाभी की बात काट कर पूछा ।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ४६ ।

"हाँ-हाँ।" भाभी को जैसे सहारा मिला।

"वह प्रीति है। माला की मौसेरी बहन", गोविन्द ने कहा, "उसकी उम्र अठारह-बीस साल की है।" [1]

इसी प्रकार अन्य भी कई नाटकीय संवाद इस उपन्यास में देखने को मिलते है जिनमें गोविन्द और माला के संवाद महत्त्वपूर्ण हैं।

५] काव्यात्मक शैली :-

उपन्यास को अत्यंत प्रभावपूर्ण बनाने के लिए काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। इससे उपन्यास में सरसता, सुंदरता आ जाती है। संवेदनशील -हृदयवाले, कवि, शायर आदि के द्वारा संवादों के अंतर्गत इस्तेमाल की गयी काव्यपंक्तियाँ शायरिया आदि आते हैं। उपेंद्रनाथ अश्क जी के उपन्यास का नायक गोविन्द ही शायर है, वह बार-बार अपने संवादों में और पात्रों में भी शायरियों का प्रयोग करता है।

गोविन्द मुशायरानुमा कवि सम्मेलन में अपनी गजुल पढ़ लेता है। जैसे -

"इश्क और वो इश्क की जांबाजियाँ
हुस्न और वो हुस्न की दमसाजियाँ
रंग यूँ लायेंगी, क्या मालूम था
ये तबीयत की तेरी नासजियाँ
गैर हालत है तेरे बीमार की
आज तो रहने दो हीलाबाजियाँ

शैली का प्रयोग इस उपन्यास में अधिक किया गया है। इसके साथ-साथ निमिषा के अंतर्मन को भी लेखक ने तुलझाकर सामने रखा है।

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - १९६-१९७।

जीत जाते साथ देता गर फलक
"दर्द" हमने हार दी" सब बाजियाँ । " [१]

अन्य कई बार भी उसने शेर सुनाये हैं । साथ ही उसने निमिषा को लिखें खत में भी शेर प्रयुक्त किए है । उसने कभी-कभी दूसरों के शेर भी लिखे है । निमिषा एक खत में कबीर का एक दोहाथी लिखा गया है ।

"कबिरा निज मन की विथा मन ही में रखो गोय
सुनि उठ ले हैं लोग सब, बाँट न लैं हैं कोय । " [१]

६] आँचलिक शैली :-

लेखक के द्वारा उपन्यास में चित्रित घटनाओं से संबंद्ध प्रदेश-विशेष का चित्रण आँचलिक शैली में होता है । उपेंद्रनाथ अश्क के उपन्यास "निमिषा" ने आँचलिक वर्णन इतनी अधिक मात्रा में नहीं हुआ है, फिर भी उन्होंने थोड़ी-बहुत मात्रा में क्यों न हो प्रदेशों का वर्णन किया है। जिसमें गोविन्दे के द्वारा किया गया कश्मीर की गर्ज का वर्णन, देवनगर की लहर का वर्णन, आदि वर्णन में प्रादेशिकता साफ झलकती है। इसके साथ ही शादीके समय में होनेवाले रीतीरिवाज, आदि का भी चित्रण किया गया है । उसके साथ ही सिक्ख परिवार का वर्णन भी किया है । जिसमें गोविंद के द्वारा

७] मनो विश्लेषणात्मक शैली :-

आधुनिक उपन्यासों मे यह एक नई शैली निर्माण हो गयी है । अश्क जी ने अपने उपन्यास में पात्रों के मानसिक द्वंद्व को चित्रित करने के लिए इस शैली का प्रयोग अपने उपन्यास में किया है । गोविन्द के अंतर्मन का विश्लेषण करनेके लिए इस शैली का प्रयोग इस उपन्यास में अधिक किया गया है । इसके

साथ-साथ निर्मिषा के अंतर्मन को भी लेखक ने सुलझाकर सामने रखा है ।

जैसे गोविन्द अपनी शादी के बाद पछतावे लगता है - "रह-रहकर उसे अपनी कमजोरी और बेबसी का एहसास होता रहा था । न उसकी बात निर्मिषा ने मानी थी, न भाई साहब और भाभी ने और वह एक बच्चे का बाप था, स्वतंत्र था, कमाता था और अपने आप को बड़ा तोप कलाकार समझता था . . . . उसका अहं इस दोहरी मार से, गयी रात एक छटपटाता रहा और सोने की कोशिश में वह बराबर करवटें बदलता रहा । उसे बार-बार खयाल आता कि वह क्यों अपने भाई और भाभी से इतना दबता है । इसी प्रकार कभी-कभी कनक पर भी आत्मभर्त्सना का दौरा पडता है । वह जब पहली बार गोविन्द के चित्र दिखाती है तो उसे अपने चित्र बुरे लगने लगते हैं। उसके हृदय में ईर्ष्या जागृत हो जाती है ।

८] चेतना प्रवाह शैली :-

यह भी एक ऐसी शैली है जिसका प्रयोग आधुनिक काल में किया जाता है । उपेंद्रनाथ अश्क जी ने भी एक-दोन स्थानोंपर इसका प्रयोग आलोच्य उपन्यास में किया है। जैसे -

"गोविन्द अपने निकट अतीत की बातें करने लगा । निकट अतीत की बात करते-करते वह सुदूर अतीत में खो गया । अपने पुरखों - परदादा, दादा, फिर पिता-माता अपने परिवार, उसकी जड जडियों, सोच के सीमित घेरे . . . अपने मुहल्ले, उसके वासियों . . . उस सारे निम्न मध्यवर्गीय माहौल, उसकी संकुचितता, धुर्तता, क्रुरता, झुठ, छल-प्रपंच, रियाकारी, आत्मवंचना . . . दसियों ब्यौरें । "

इस प्रकार चेतना प्रवाह शैली का प्रयोग किया है ।

९] पूर्व दिप्ती शैली :-

इसे अंग्रेजी में फ्लेश बेक शैली कहा जाता है । इसमें पात्रों को अतीत की घटनाएँ याद आती है और उन्हें ज्यों-का त्यों प्रस्तुत किया जाता है । उपेंद्रनाथ अश्क जी के उपन्यास "निमिषा" में इस शैली का कई बार प्रयोग किया गया है । निमिषा को अपना बचपन, गोविन्द का मुशायरे नुमा कविसम्मेलन में प्रथम बार देखना, कनक के मुख्य से गोविन्द का पहली बार नाम सुनना, गोविन्द का पत्नी को खत लिखते समय पत्नी से सम्बधित घटनाओं का याद सारी घटनाएँ इसी शैली में लिखी गयी है ।

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि "निमिषा" उपन्यास में कई तरह की शैलियों का प्रयोग अश्क जी ने अत्यंत सफलता के साथ किया है।

निष्कर्ष :-

उपेंद्रनाथ अश्क जी हिन्दी साहित्य में अपना एक अलग अस्तित्व रखनेवाले साहित्यकार है । उनका साहित्य यद्यपि काफी विवादग्रस्त क्यों न रहा हो, फिर भी अत्यंत प्रसिद्ध हो चुका हैं । उनकी यह विशेषता रही है कि उनके उपन्यासों को अधिक सराहा गया ।

उपेंद्रनाथ अश्क जी का "निमिषा" उपन्यास भी उपर्युक्त बात के लिए अपवाद नहीं रहा है । उन्होंने शिल्प विधान के अंतर्गत आनेवाले तीनों महत्त्वपूर्ण बातों को और समान ध्यान दिया है और उसका सफलतापूर्वक प्रयोग किया है । "निमिषा", उपन्यास के संवाद शिल्प में उपयुक्तता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, उद्देश्यपूर्णता, सम्बध्दता, अनुकूलता, भावात्मकता आदि गुण दिखाई देते हैं । उन्होंने भाषा शिल्प के अंतर्गत शब्द प्रयोग के विभिन्न स्थोंका तत्सम तद्भव, देशज अंग्रेजी शब्द और वाक्य, अरबी, फारसी, उर्दू, दिलक्त, निरर्थ,

अपशब्द आदि प्रयोग किया है । भाषा के भी विभीन्न रूप जैसे वर्णनात्मक, उपदेशात्मक, व्यंग्यात्मक, पात्रानुकूल, आवेशात्मक, गंभीर, ग्राम्य आदि का प्रयोग किया हैं । इसके साथ ही साथ भाषा के सौंदर्य को बढ़ाने के लिए उन्होंने विशेषण, उपमाएँ, कहावतें, मुँहावरे, सुक्तियाँ आदि का प्रयोग किया हैं । शैली शिल्प की दृष्टी से देखा जाए तो इस अकेले उपन्यास में ही वर्णनात्मक, विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक, पत्रात्मक, नाटकीय, काव्यात्मक, आँचलिक, मनोविश्लेषणात्मक, चेतना प्रवाह, पूर्वदीप्ति आदि शैलियों का प्रयोग किया गया है । इन सभी की वजह से यह उपन्यास अत्यंत सरस, सुंदर कौतुहलवर्धक बन गया है । इस उपन्यास की कथावस्तु अत्यंत ही सरस है । उपन्यास का आरम्भ कौतुहलवर्धक है । पात्रों की योजना अत्यंत स्वाभाविक है । पुरे उपन्यास में देश-काल तथा वातावरण का उचित ख्याल रखा गया है । नारी के अंतर्मन को खेलने का प्रयास करनेवाले इस उपन्यास को अपने उद्देश्य तक पहुँचाने में लेखक सफल हुआ है । इस प्रकार वस्तुशिल्प, चरित्रशिल्प, वातावरण शिल्प और उद्देश्य शिल्प इन सभी में भी लेखक सफल सिद्ध होता है । आरम्भ से लेकर अंततक इसे पढ़ने की रुचि बनाए रखने का काम इस उपन्यास का शिल्पविधान ही करता है । यही वजह है कि यह उपन्यास शिल्पविधान की दृष्टि से अत्यंत सफल बन गया है ।

..

उपसंहार

उपेन्द्रनाथ अश्क हिन्दी साहित्य के एक सृजनशील प्रतिभासंपन्न साहित्यकार रहे हैं। उन्होंने अनेक तरह की विधाओं में साहित्यसृजन किया है। चाहे वे अधिकतर नाटककार के रूप में ही जाने जाते हैं। फिर भी उन्होंने कविता, कहानी, एकांकी, उपन्यास, संस्मरण, रोखाचित्र, आदि विधापर अपनी लेखनी चलायी है। हिन्दी के साथ-साथ उन्होंने उर्दू भी साहित्य सृजन किया है।

बचपन से ही वे संघर्ष करते आये हैं। उन्हें बचपन में पिता द्वारा प्रताड़ना मिली है और उनका बचपन अभाव में ही गुजरा है। वे अध्यापक, लेखक, वक्ता, संपादक, अभिनेता, वकिल, निर्देशक बनाने के सपने देखा करते थे। कुछ अंशों में उनके सपने पूरे भी हो गये। बचपन के अभाव के कारण उन्होंने अखबार के ऑफिस में रात में भी नौकरी की जिसके परिणाम स्वरूप आगे चलकर उन्हे 'यक्ष्मा' की बीमारी से पीड़ीत होना पड़ा। वे कभी ट्यूशन लेकर तो कभी अखबार बेचेकर अपना जीविकोपार्जन करते रहें। न चाहते हुए पहली शादी, पहली पत्नी की मृत्यू के बाद एक स्कैंडल से डरकर दूसरी शादी और दूसरी बीवी से तंग आकर तीसरी शादी की। आज कौशाल्या अश्क एक सफल पत्नी के रूप में रही हैं।

उनके उपन्यासों से उनका जीवन साफ झलकता है। उनके उपन्यासों के पात्र याने स्वयं वे ही है। सिर्फ नाम बदलकर चेतन, गोविन्द आदि रूपों में उन्होंने अपने आप को प्रस्तुत किया है। उनमें आत्मविश्वास, महत्त्वाकांक्षा, स्वाभीमान, संघर्षशील वृत्ति आदि विशेषताएँ देखने को मिलती है।

अश्कजी के अन्य उपन्यासों में पात्रों की भरमार हैं जब कि उनके 'निमिषा' उपन्यास में सिर्फ तीन प्रमुख पात्र हैं - गोविन्द, निमिषा, माला। अन्य

पात्र गौण रूप में आये हैं। इसका कथानक गोविन्द और निमिषा को लेकर ही लिखा गया है। इसमें गोविन्द के रूप में लेखक स्वयं ही अपना व्यक्तित्व प्रस्तुत करता है। जैसे अश्क जी स्वयं पहली पत्नी की मृत्युके बाद एक स्कैंडल से डरकर दूसरी शादी करने के लिए तैयार हो जाते हैं, गोविन्द भी वही करता है। इसी बीच वह निमिषा के करीब आता है और उसके प्रति आकृष्ट हो जाता है। निमिषा अत्यंत दृढ विचारोंवाली लड़की है जब कि गोविन्द जो सोचता है उसके विपरीत आचरण करता है। गोविन्द का निर्णय न ले पाना उसकी अपनी जिंदगी बिगाड़ देता है। अपनी होने-वाली पत्नी का वर्णन सुनकर वह न तो सगाई तोड़ता है और निमिषा को ही छोड़ता है लेकिन माला से ब्याह करके वह फँस जाता है क्योंकि वह सुंदर भी नहीं है और उसे कोई सलीका भी नहीं है। दमित वासना के कारण वह पति की घृणा का शिकार होती है। अंत में गोविन्द इतना तंग आता है कि वह उसे त्याग देता है। वह फिर निमिषा को अपनाना चाहता है जो क्षणिक आवेग में कोई निर्णय न लेती थी।

पात्र चरित्र चित्रण की दृष्टीसे अगर देखा जाए तो सिर्फ तीन प्रमुख पात्रोंके सहारे इस उपन्यास में 'बडी-बडी आँखे' उपन्यास की कथावस्तु को दोहराया गया है। चन्दा और चन्दर पात्र तो निमिषा और गोविन्द है। पूरा उपन्यास 'निमिषा'को केंद्र में रखकर लिखा गया है। अत: इसे नायिका प्रधान उपन्यास कहा जा सकता है। 'निमिषा' के व्यक्तित्व में दृढता, कार्यकुशलता, वक्त की पाबंद, आत्मीय, संयमी, तेज बुद्धि, भावुक, समझदार आदि गुण दिखाई देते हैं जब कि गोविन्द का व्यक्तित्व इसके विपरित है। वह बहानेबाज, सौंदर्य के प्रति आकृष्ट, कम निर्णय क्षमता होनेवाला है। माला, कनक, एडवोकेट खन्ना, चाची, मिसेज शर्मा जैसे पात्र मुख्य पात्रोंके चरित्रपर प्रकाश डालते हैं।

उपेन्द्रनाथ अश्क का पूरा जीवन मध्यवर्गीय परिवार में बीता है। उन्होंने इस वर्गकी समस्याओंको देखा, समझा और अपने उपन्यासों में चित्रित

किया। ऐसे उपन्यासों में 'निमिषा' एक ऐसा उपन्यास है जिसका नायक और नायिका दोनोंही मध्यवर्गीय व्यक्ति है। इस उपन्यास के पात्रों के माध्यम से लेखकने मध्यवर्गीय लोगोंको सतानेवाला अर्थाभाव, अंतर्जातीय विवाह, प्रौढ लड़कियोंकी दयनीय स्थिति, संकुचित वृत्ती, शादी की निरर्थक रस्में, पारिवारिक विघटन, उच्चवर्गीय लोगोंका अनुकरण आदि कई बातोंका चित्रण किया है। इस उपन्यास से अश्क जी का मध्यवर्गीय जीवन के प्रति देखने का नजरिया साफ झलकता है।

उपेन्द्रनाथ अश्क जी के 'निमिषा' उपन्यास को लिखने के पीछे लेखक का उद्देश समस्याओं का चित्रण करना नहीं था। इसी वजहसे इस उपन्यास में कुछ छुटपुट समस्याएँही दिखाई देती हैं। राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, इन चार प्रकार की समस्याओं में भी अश्कजी ने समस्याएँ ठोस रूप में व्यक्त नहीं की है। यह उपन्यास सामाजिक है फिर भी इसमें कई सामाजिक समस्याओंका जिक्र तक नहीं आया क्योंकि यह उपन्यास पात्रोंका मनोविश्लेषण अधिक करता है। इसी वजहसे उपेन्द्रनाथ अश्कजी समस्या चित्रण के पत्र में असफल दिखाई देते हैं।

'निमिषा' उपन्यास शिल्पविधान की दृष्टिसे अत्यंत सफल दिखाई देता है। इसके संवादों में उपयुक्तता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, उद्देशपूर्णता, सम्बद्धता, भावात्मकता, अनुकूलता आदि गुण दिखाई देते हैं। अश्कजी ने शब्दप्रयोग के विभिन्न रूप जैसे तत्सम, तद्भव, देशज, अंग्रेजी, फारसी, उर्दू निरर्थक, अपशब्द आदिका प्रयोग किया है। उन्होंने भाषा के अलग-अलग रूप प्रस्तुत किये हैं। जैसे - वर्णनात्मक, उपदेशात्मक, पात्रानुकूल, व्यंगात्मक, आवेशपूर्ण, गंभीर, ग्राम्य आदि। भाषा सौंदर्य के साधन जैसे - उपमाएँ, विशेषण, कहावतें, मुँहावरे, सुक्तियाँ आदिका प्रयोग किया है। वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, पत्रात्मक, नाटकीय, काव्यात्मक, आंचलिक, मनोविश्लेषणात्मक, चेतना प्रवाह, पूर्वदिप्ती आदि शैलियोंका प्रयोग भी

किया गया है जिसकी वजहसे आरंभ से अंत तक रोचकता बनी रहती है। इन सारी विशेषताओंकी वजहसे ही शिल्पविधान की दृष्टिसे यह उपन्यास सफल बन गया है।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि उपन्यास के तत्वों, कथावस्तु, पात्र चरित्र चित्रण, भाषा शैली, देश-काल वातावरण आदि सभी की दृष्टिसे यह उपन्यास सफल बन गया है सिर्फ समस्या चित्रणके पक्ष में अशक जी असफल हुए हैं। इसका मतलब यह नहीं कि उनका यह पूरा उपन्यास असफल है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन को भोगा है इसी वजहसे अत्यंत यथार्थ रूपमें उन्होंने मध्यवर्गीय जीवनका चित्रण किया है। पात्रोंकी भरमार भी इस उपन्यास में दिखाई नहीं देती है। गोविन्द के माध्यमसे अपनी ही राम - कहानी लेखक ने दोहरायी है। गोविन्द [निमिषा] चेतन [बड़ी बड़ी आँखे] और लेखक स्वयं इन तीनोंकी भी कहानी लगभग एक समान लगती है।

इस प्रकार ` निमिषा ` उपन्यास एक अत्यंत सफल उपन्यास है।

मौलिकता :

मेरी इस लघु शोध-प्रबन्ध की मौलिकताएँ निम्नलिखित हैं -

[१] संपूर्ण विवेचन उपलब्ध सामग्री तथा प्रत्यक्ष अध्ययन पर आधारित है।

[२] चरित्रों को व्यवहारिक दृष्टि से सामाजिक परिप्रेक्ष्य में परखने की कोशिश की है।

[३] शिल्पगत अध्ययन करते वक्त हर शब्द की जाति एवं प्रकार का उल्लेख किया है।

[४] अध्ययन के बल पर लेखक के व्यक्तित्व को उभारने की चेष्टा की है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :

१] ` निमिषा ` उपन्यास में चित्रित समाज जीवन ।

२] ` निमिषा ` उपन्यास में ग्राम तथा शहरी जीवन।

इन दो विषयोंपर भविष्य में अनुसंधान किया जा सकता है।

.....